GSEB Std 9 Hindi Textbook Solutions Chapter 17 तुलसी के पद

Std 9 GSEB Hindi Solutions तुलसी के पद Textbook Questions and Answers

स्वाध्याय

1. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1. तुलसीदास के मत से कौन पतितपावन हैं.?
उत्तर :
तुलसीदासजी के मत से उनके स्वामी श्रीराम पतितपावन हैं।

प्रश्न 2. भगवान को अति दीन कैसे लगते हैं?
उत्तर :
भगवान को अति दीन प्रिय लगते हैं।

प्रश्न 3. भगवान ने हठ करके किनका उद्धार किया?
उत्तर :
भगवान ने हठ करके पक्षी, मृग, व्याध, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार किया।

प्रश्न 4. माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते हैं?
उत्तर :
देवता, राक्षस, मुनि, नाग (हाथी), मनुष्य - ये सब माया के प्रति विवश होकर सोचते हैं।

प्रश्न 5. प्रभु दानी है, तो कवि क्या है?
उत्तर :
प्रभु दानी हैं, तो कवि भिखारी हैं।

प्रश्न 6. कवि पाप पुंजहारी किसे कहते हैं?
उत्तर :
कवि भगवान श्रीराम को 'पापपुंजहारी' कहते हैं।

2. विस्तार सहित उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1. तुलसीदासजी प्रभु के चरणों को छोड़कर कहीं ओर क्यों नहीं जाना चाहते हैं?
उत्तर :
तुलसीदासजी के अनुसार प्रभु श्रीराम पतितपावन हैं। वे दीन-दुःखी जनों के प्रेमी हैं। उन्होंने हठ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

करके अनेक दुष्टों का उद्धार किया है। पक्षी, मृग, व्याध, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार करने में भी उन्होंने देर नहीं की। बाकी देवता, मुनि और मनुष्य आदि माया के वशीभूत हैं। उनसे संबंध जोड़ने का अर्थ नहीं है। श्रीराम जैसी दया और सामर्थ्य और किसी में नहीं है। इसलिए तुलसीदासजी अपने प्रभु के चरणों को छोड़कर और कहीं जाना नहीं चाहते।

प्रश्न 2. तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े है? क्यों?

उत्तर :

तुलसीदास किसी भी रूप में भगवान से जुड़े रहना चाहते हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि भगवान दयालु है तो वह दोन अर्थात् दया के पात्र हैं। यदि प्रभु दानी हैं, वो तुलसीदासजी भिखारी हैं। प्रभु पापों का नाश करते हैं, तो तुलसीदास जैसा कोई पापी नहीं। प्रभु अनाथों के नाथ हैं, तो तुलसीदासजी जैसा कोई अनाथ नहीं। यदि प्रभु दुःख दूर करते हैं, तो तुलसीदासजी जैसा कोई दुःखी नहीं हैं। प्रभु ब्रह्म हैं, तो तुलसीदास जीव है। प्रभु स्वामी हैं, तो तुलसीदासजी सेवक हैं। भगवान ही तुलसीदास के माता, पिता, गुरु, सखा आदि सबकुछ है। इस प्रकार तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक संबंध जोड़े हैं। इसका कारण यह है कि वे किसी भी संबंध से भगवान की शरण पाना चाहते हैं।

प्रश्न 3. 'तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक नाते बताए हैं। वे भगवान से कहते हैं कि इनमें से जो नाता आपको स्वीकार हो, उस नाते से मेरे से जुड़े रहें। तुलसी जानते हैं कि जब तक भगवान से एक निश्चित नाता नहीं होता तब तक भक्ति करने में आनंद नहीं आता। एक नाता जुड़ जाने से ही भक्ति में गहराई आती है। उससे भगवान को एक निश्चित संबोधन से पुकारने में सरलता होती है और अपनत्व बढ़ाने में मदद मिलती है। इसलिए तुलसीदास भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे उनसे कोई एक निश्चित नाता बनाकर उन्हें अपना ले।

3. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

प्रश्न 1. देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ॥

उत्तर :

हे भगवान राम! देवता, राक्षस, मुनि, हाथी, वृक्ष, यवन, देवता आदि सब माया के वशीभूत हैं। इनमें मुझ जैसों के प्रति अपनापन नहीं हो सकता। इसलिए इनसे किसी तरह की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। हे प्रभु, मायारहित केवल आप ही हैं। मुझ जैसे भक्तों का ख्याल केवल आप ही रख सकते हैं। इसलिए आपके सिवा मैं और किसी की शरण में जाने की बात नहीं सोच सकता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 2. नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसो?
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥

उत्तर :

तुलसी भगवान से कहते हैं कि जिनका संसार में कोई रक्षक नहीं है, उनकी रक्षा आप ही करते हैं। मेरे जैसा और कोई अनाथ नहीं है। इसलिए आपको हो मेरी रक्षा करनी होगी, मेरे समान कोई दुःखी नहीं है। अपने दुःख दूर करने के लिए मैं आपको ही पुकालमा, क्योंकि आपके समान दुखियों के दुःख हरनेवाला दूसरा कोई नहीं है।

4. समानार्थी शब्द लिखिए।

प्रश्न 1.

1. **अधम**
2. **दनुज**
3. **मनुज**
4. **पातकी**
5. **आरत**
6. **चेरो**

उत्तर :

1. नीच
2. राक्षस
3. मनुष्य
4. पापी
5. दुःखी
6. दास

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए।

प्रश्न 1. पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर

उत्तर :

पापोद्धारक

प्रश्न 2. जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो

उत्तर :

अनाथ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in